Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

ISSN 2277-8721 UGC Approved Journal No 48833

माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन

ममता (शोधार्थी)

डा विष्णु कुमार (सहायक प्रोफसर)

जैन विश्व भारती विश्वविधालय लाडनू नागौर राजस्थान

प्रस्तावना :–

शिक्षा की प्रक्रिया में विद्यालय के प्रधानाध्यापक का विशेष महत्व है, विद्यालय पद्धति की सरलता उसी की कुशलता एवं संतुलनात्मक योग्यता पर निर्भर करती है। विद्यालय के हर अंग से प्रधानाध्यापक की छवि प्रतिबिम्बित होती है। विद्यालय का वातावरण, उत्थान, पतन, मानसिक, भौतिक तथा नैतिक परिस्थितियां सभी प्रधानाध्यापक के व्यक्तित्व की कहानी कहते हैं। शिक्षकों की अनेक शिक्षण क्षेत्र से संबंधित समस्याओं का वह समाधान कर अध्यापकों का मार्गदर्शन करता है जैसा प्रधानाध्यापक होगा शिक्षक वैसा ही शिक्षण करेंगे।''किसी विद्यालय में प्रधानाध्यापक की स्थिति बड़ी अजीब होती है। वह एक ओर प्रशासक के रूप में भी कार्य करता है तो दूसरे रूप में वह कार्यकर्ता के रूप में भी कार्य करता है। एक प्रधानाध्यापक विद्यालय के सभी दायित्व बखूबी तभी निभा सकता है जब वह अपने कार्य में रूचि रखता है और वह अपने कार्य में रूचि तभी रख सकेगा जब वह अपने कार्य के प्रति संतोष रखता हो या अपने व्यवसाय को लेकर तनाव में नहीं रहता हो।

व्यवसाय या जीविका का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। व्यवसय मानव को जीवन यापन का साधन ही प्रदान नहीं करता अपितु उचित व्यवसाय में स्थान मिलने पर मानव को आत्म संतुष्टि प्रापत होती है तथा उसमें आत्म बल का संचार होता है। मानव जीवन में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा आत्म निर्भरता की दृष्टि से व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज में उन नवयुवकों को सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है जो अध्ययन समाप्त करके जीविकोपार्जन कर आत्म निर्भर बनने में प्रयत्नशील है।

समस्या का औचित्य

कोई भी समस्या साधारण या असाधारण नहीं होती है। कोई भी समस्या केवल तब तक ही समस्या है जब तक कि उस पर ध्यान नहीं दिया जाता है, समस्या यदि महत्वपूर्ण है तो इसका अध्ययन एक विशेष महत्व रखता है, प्रस्तुत शोध कार्य हेतु ली गई समस्या भी अपने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। क्योंकि प्रधानाध्यापक विद्यालय का प्रमुख आधार होता है, विद्यालय की सारी गतिविधियां उसके अनुसार ही घूमती रहती है। कभी–कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति अध्यापन–व्यवसाय को विवशता में भी अपनाते हैं और इसलिए अध्यापन के प्रति उनके मन में कोई रूचि नहीं होती है। विवशता का कारण यह भी हो सकता है कि वर्तमान में बेरोजगारी अत्यधिक बढ़ गई है, जिसके कारण जो भी सरकारी नौकरी मिलती है उसे अपना लेते हैं या और कोई रोजगार नहीं मिलता है, तब वह शिक्षण व्यवसाय में आ जाते हैं। कोई व्यक्ति अपने मां बाप की इच्छा से भी अध्यापन व्यवसाय को चुन लेते हैं। क्योंकि लड़कियों को उनके मां–बाप कहते हैं कि अध्यापन व्यवसाय इज्जत की नौकरी होती है अन्य नौकरी में उसे रात दिन की नौकरी करनी पड़ती है और छुट्टी नहीं मिलती है। चाहे लड़की की इस नौकरी में रूचि हो या नहीं फिर भी मजबूरीवश इसे यह व्यवसाय अपनाना पड़ता है, लेकिन इतने लगन से शिक्षण व्यवसाय को नहीं कर पाते हैं, जिसको लेकर भी प्रधानाध्यापक तनाव में रहते हैं। कई प्रधानाध्यापक तनख्वाह को लेकर भी असंतोष में रहते हैं, क्योंकि उन्हें अन्य जॉब के बजाय कम तनख्वाह मिलता है। निजी शिक्षण विद्यालयों के प्रधानाध्यापक की यह समस्या रहती है कि उसे काम सरकारी प्रधानाध्यापक जितना ही करना पड़ता है फिर भी उसे तनख्वाह उसे सरकारी प्रधानाध्यापक जितनी नहीं मिलती है, इसे लेकर भी वह तनाव में रहता है। अत: वह अपने व्यवसाय को लेकर तनाव में हो जाता है और उन घटकों, कारकों एवं क्षेत्रों का अध्ययन करना, जो प्रधानाध्यापक में व्यवसायिक तनाव को पैदा करते हैं। यह एक अध्ययन का विषय बन जाता है। साथ ही यह पता लगाना है कि वर्तमान में प्रधानाध्यापक पर अन्य कार्य कौन–कौन से हैं जिसे लेकर वह तनाव में रहता है। स्पष्टत: इस अध्ययन में प्रधानाध्यापक को वास्तविक स्थिति के बारे में बताने का प्रयास किया है, विद्यालय में प्रधानाध्यापक की महत्वता को दृष्टिगत रखते हुए एवं उसकी समस्याओं को देखते हुए शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए ''माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यवसायिक तनाव का अध्ययन'' विषय चुनाव है। शोधार्थी ने शोध कार्यों में उक्त विषय का अभाव परिलक्षित होने के कारण ही इस विषय को लघु शोध प्रबंध की समस्या के

रूप में चुना है।

समस्या कथन :—''माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :—

सरकारी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।

१. सरकारी माध्यमिक विद्यालय के पुरूष प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।

२. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष प्रधानाध्यापकों पर व्यवसायिक तनाव का अध्ययन करना।

३. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के महिला प्रधानाध्यापिकाओं पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।

४. सरकारी माध्यमिक विद्यालय के महिला प्रधानाध्यापिकाओं पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।

५. माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों के व्यावसायिक तनाव में अन्तर कर अध्ययन करना।

न्यादर्श :—

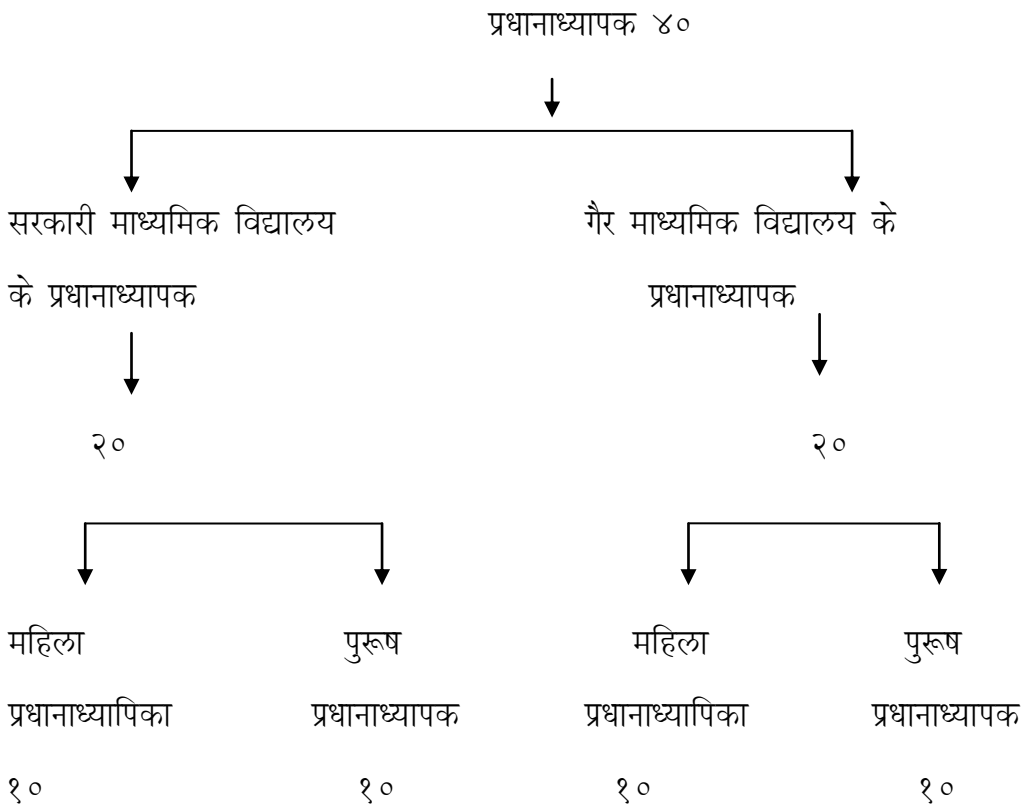

शोध विधि :— साक्षात्कार प्रविधि

अध्ययन के चर :—

१. **स्वतंत्र चर** :— व्यावसायिक तनाव

२. **आश्रित चर :—** प्रधानाध्यापक

शोध उपकरण :— साक्षात्कार अनुसूची

शोध के निष्कर्ष —

१. **उद्देश्य के आधार पर निष्कर्ष :—**

(1) माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :— प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि प्रधानाध्यापकों पर कार्यभार, अभिभावक, अनुशासन, मिड डे मील, विद्यालय सुविधाएं पाठ्यक्रम, संकाय, सदस्य व शिक्षा के नये—नये अधिनियम को लेकर तनाव महसूस करते हैं।

(2) **सरकारी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना —**

निष्कर्ष:— प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष में कहा गया है कि सरकारी प्रधानाध्यापकों पर व्यवसायिक तनाव अधक है। उन पर पाठ्यक्रम, विद्यालय सुविधाएं, कर्मचारी, उच्च अधिकारियों के दबाव व स्टाफ की कमी को लेकर तनाव रखते हैं।

(3) **गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन—**

निष्कर्ष :— प्रस्तुत शोध कार्य के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक अभिभावकों द्वारा फीस जमा नहीं करने व अधिक कार्य करने पर भी पारिश्रमिक कम मिलने के कारण तनाव महसूस करते हैं।

(4) **सरकारी माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिकाओं पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन —**

निष्कर्ष :— प्रस्तुत शोध अध्ययन में इस उद्देश्य के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया है कि मिड—डे—मील, अनुशासन, अभिभावकों को लेकर प्रधानाध्यापिकाओं में कम तनाव पाया गया है, जबकि शिक्षकों की कमी, पाठ्यक्रम व शिक्षा के नये—नये अधिनियमों को लेकर अधिक तनाव

महसूस किया गया है।

(5) **गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिकाओं पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना–**

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध कार्य के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया है कि गैर सरकारी प्रधानाध्यापिकाओं को घर की जिम्मेदारी व विद्यालय की जिम्मेदारी को लेकर अधिक तनाव पाया गया है। प्रधानाध्यापिकाओं को अनुशासन, विद्यालय सुविधाओं, संकाय सदस्यों को लेकर कोई तनाव नहीं है। पाठ्यक्रम व सरकार के आठवीं कक्षा तक पास करने के नियम को लेकर भी तनाव पाया गया है।

(6) **माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों के व्यावसायिक तनाव में अन्तर का अध्ययन करना –**

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध कार्य के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के बजाय सरकारी प्रधानाध्यापक अधिक तनाव महसूस करते हैं। सरकारी माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिकाओं की बजाय गैर सरकारी प्रधानाध्यापिकाओं में अधिक तनाव पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ –

इस अध्ययन में प्रधानाध्यापकों के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया गया है। प्रधानाध्यापकों पर कार्यभार, अभिभावक, अनुशासन, नये अधिनियम, विद्यालय सुविधाएं, संकाय सदस्य, मिड–डे–मील और पाठ्यक्रम को लेकर तनाव पाया गया है। अध्यापक एक सामाजिक प्राणी है, जो समाज द्वारा स्थापित सामाजिक उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था नियोजित करता है तथा विद्यार्थियों को शिक्षण प्रदान करता है, लेकिन वह यह दायित्व तभी निभा सकता है, जब उसके कार्य करने की स्वतंत्रता तथा अत्यधिक कार्यभार नहीं होगा।

विद्यालय की दिनचर्या, कक्षा निरीक्षण, समय सारणी, अध्यापकों पर प्रभाव, विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम, खेलकूद आदि पर प्रधानाध्यापक का प्रभाव होता है। प्रधानाध्यापक पर इतना अधिक कार्य भार नहीं होगा तो वह स्वतंत्र रूप से कार्य कर पायेगा तथा उसे मानसिक तनाव नहीं होगा। सरकारी प्रधानाध्यापकों को तो अत्यधिक काम करना पड़ता है, इसके अतिरिक्त उन्हें स्टाफ की कमी होने के कारण ऑफिस वर्क के साथ–साथ कक्षाएं भी लेनी पड़ती है। उन्हें शिक्षण कार्य के अतिरिक्त सामाजिक कार्य भी करने पड़ते हैं, इसलिए प्रधानाध्यापक अपने व्यवसाय को लेकर भी तनाव में रहता है। इस अध्ययन से पता चलता है कि प्रधानाध्यापक कार्यभार,

अभिभावक, मिड डे मील, अनुशासन, संकाय सदस्य, शिक्षण के नये–नये अधिनियम, पाठ्यक्रम, विद्यालय सुविधाएं, कर्मचारियों आदि को लेकर परेशानी महसूस करते हैं। अत: सरकार को चाहिए कि प्रधानाध्यापकों की इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें।

परिसीमन :–

१. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अजमेर जिले के सरकारी व निजी प्रधानाध्यापकों को ही लिया गया है।

२. प्रस्तुत अध्ययन केवल प्रधानाध्यापकों के तनाव तक ही सीमित है।

३. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु माध्यमिक विद्यालय को ही लिया गया है।

४. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु २० सरकारी व २० निजी विद्यालयों के ४० प्रधानाध्यापकों को ही लिया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्निहोत्री, रविन्द्र १९९७ – ''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं एवं समाधान, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।''

अग्रवाल जे.सी. १९६७– ''शैक्षिक विचार'' नई दिल्ली, एरिया बुक डिपो

अग्रवाल जे.सी. २००७ – ''शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबन्धन के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

बघेला एच.एस. २००७ ''शैक्षिक प्रबन्ध एवं विद्यालय संगठन'' राजस्थान प्रकाशन जयपुर

भट्टाचार्य जे.सी. २००७ – ''अध्यापक शिक्षा'' आगरा,अग्रवाल पब्लिकेशन

भटनागर ए.बी. – ''मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन'') मेरठ सूर्या पब्लिकेशन्स

बैस एच.एस. ''शिक्षा की रूपरेखा''२००३, नई दिल्ली आशीष पब्लिशिंग हाउस

बैस एस.एच एवं अहलूवालिया एस.पी. १९९८ – ''शैक्षिक व्यवस्थापन'' भोपाल (म.प्र.) हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.

बुच एम.बी., ''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', वॉल्यूम –। १९८३–८८ नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी.।

भार्गव महेश प्रसाद, सिंहला १९९८ – ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी के मूलाधार'' आगरा, भार्गव बुक हाउस

चौबे एस.पी. १९५६ – ''सैकेण्डरी एजूकेशन फोर इण्डिया'' नई दिल्ली, आत्मा राम एण्ड सन्स

डोडियाल सच्चिदानन्द एण्ड काटक अरविन्द १९७२ – ''शैक्षिक अनुसंधान की विधि शास्त्र'' जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकादमी

हैनरी ई गैरिट शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग २००५ लुधियाना, कल्याणी पब्लिशर्स

गुप्ता एम.के. – ''मन को नियंत्रित कर तनाव मुक्त कैसे रहें।''

''इण्डियन एज्यूकेशनल एब्सट्रेक्स'', एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम – ६, नम्बर–१ (जनवरी २००६) नई दिल्ली।